B-384
L- 21
General
Geography

कोहरा के प्रकार :-

कोहरा → निचले वायुमण्डल में जब तापमान ओसांक बिन्दु के नीचे चला जाता है तो जलवाष्प के संघनित होने से पानी की सूक्ष्म बूँदें बनती हैं और दृश्यता सीमित हो जाती है, इस स्थिति को कोहरा (fog) कहते हैं।

अभिवहन कोहरा → सापेक्षिक रूप से गर्म व नम वायु के क्षैतिजिक प्रवाह से जनित कोहरा अभिवहन कोहरा कहलाता है। ये कोहरा इसलिए बनता है क्योंकि जब ये हवा किसी ठण्डी सतह के सम्पर्क में आती है तो इसका तापमान कम

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

होने लगता है और यदि तापमान ओसांक बिन्दु के नीचे चला जाता है तो जलवाष्प संघनित होकर कोहरा बनाता है, उदाहरण- शीतोष्ण व शीत अक्षांशीय ठण्डी भूमि पर सागरीय वायु राशियां के प्रवेश से इस कोहरे का निर्माण होता है।

विकिरण कोहरा → सर्दी की ठण्डी रात व साफ आसमान की दशाओं में पार्थिव विकिरण से पृथ्वी की सतह तेजी से ठण्डी होती है, इस दौरान यदि तापमान ओसांक बिन्दु से नीचे चला जाता है तो वायु में संघनन के कारण जो कोहरा निर्मित होता है उसे विकिरण कोहरा

Scanned by CamScanner

कहते हैं, उदाहरण- शीत ऋतु में उत्तर भारत के मैदानों में निर्मित कोहरा।

वर्षण और वर्षण के प्रकार →

वायुमंडल की ऊपरी परतों में जलवाष्प के संघनन द्वारा मेघों का निर्माण होता है, मेघ में जल के सूक्ष्म कण एक साथ जुड़े हुए होते हैं और हवा से हल्के होने के कारण बादल में तैरते हैं। इन बादलों में छोटी बूँदें मिलकर बड़ी व भारी बूँदों का निर्माण करती हैं, इन बूँदों के निरंतर बड़े होने पर इनका भार इतना अधिक हो जाता है और गुरुत्व बल के प्रभाव में ये नीचे की ओर वृष्टि/ वर्षा

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner

बनके गिरते हैं यदि इस वृष्टि की प्रक्रिया में तापमान हिमांक से कम होता है तो वर्षा की बूँदों के स्थान पर हिम कण (Snow flakes) पृथ्वी की ओर गिरते हैं, इस प्रक्रिया को हिमपात कहा जाता है।

मेघों / बादलों का वर्गीकरण →

आकार के आधार पर 3 प्रकार के-

i) पक्षाभ

ii) कपासी

iii) स्तरी 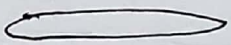

जिन बादलों से वर्षा होती है उन्हें "निम्बस" (वर्षीला बादल) कहते हैं।

पक्षाभ कभी वर्षा नहीं देते और ये हिमकणों द्वारा निर्मित होते हैं।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

Scanned by CamScanner

ऊँचाई के आधार पर →

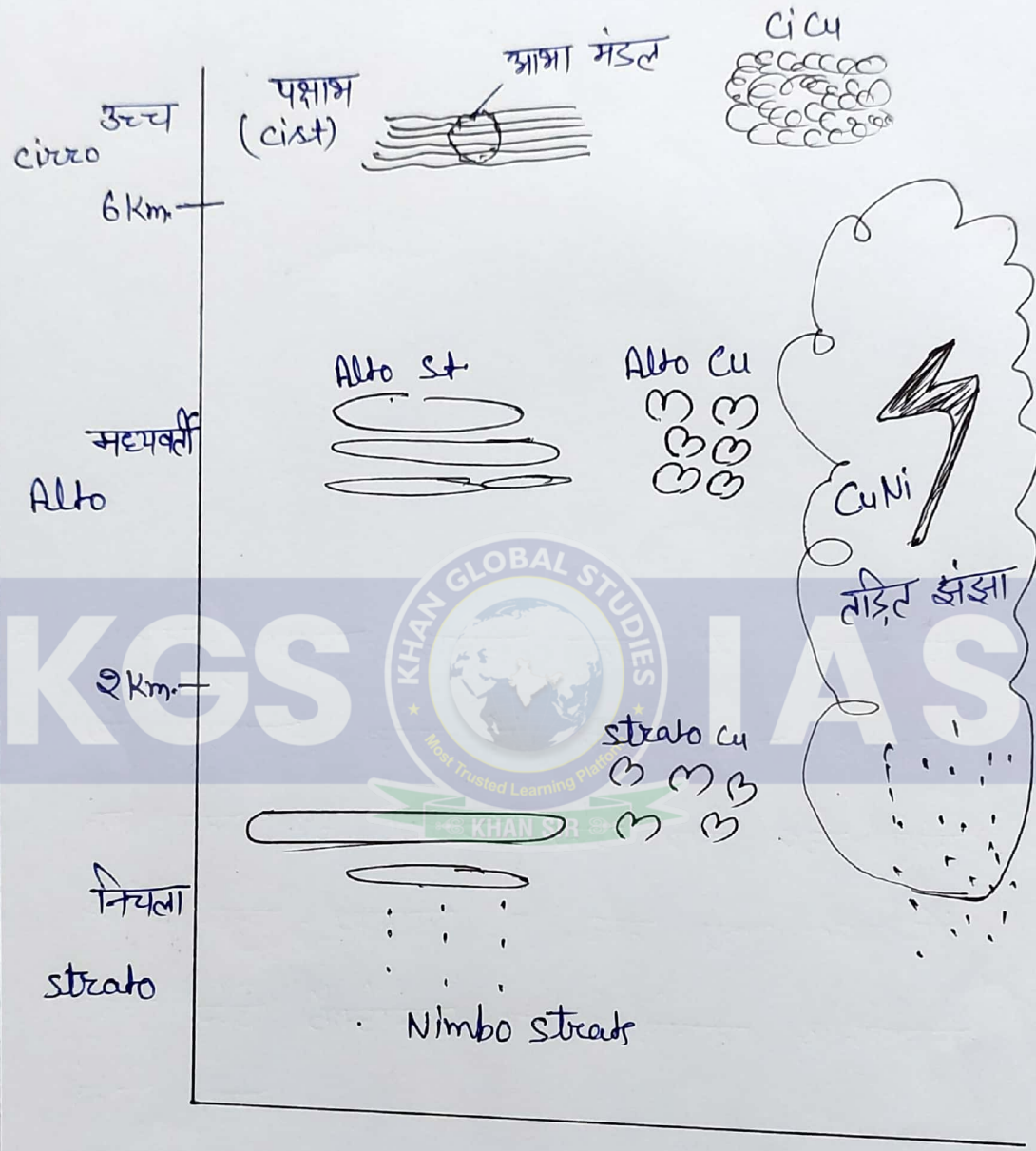

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner